



श्रीहित सेवक जी महाराज कृत

# श्रीहित सेवक वाणी



श्री हित प्रताप चंद्र गोप्त्वामी जी महाराज

श्री हित मन मोहन गोप्त्वामी जी महाराज

श्री हित निमिष गोप्त्वामी जी महाराज

!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

प्रथम प्रकरण  
॥ श्रीहित जस विलास प्रकरण ॥

{त्रिपदी छंद}

श्री हरिवंश-चन्द्र शुभ नाम । सब सुख-सिंधु प्रेम रस धाम ॥  
याम घटी बिसरै नहीं ॥ यह जु परयौ मोहि सहज सुभाव ।  
श्रीहरिवंश नाम रस चाव ॥ नाव सुद्रढ़ भव तरन कौं ॥  
नाम रटत आई सब सोहि । देहु सुबुद्धि कृपा कर मोहि ॥  
पोहि सु गुन माला रचौं ॥ नित्य सुकंठ जु पहिरौं तासु ।  
जस वरनौ हरिवंश विलास ॥ श्रीहरिवंशहि गाइहौं ॥१॥

श्रीवृन्दावन वैभव जिती । वरनत बुद्धि प्रमानौं किती ॥  
तिती सबै हरिवंश की ॥ सखी-सखा क्यों कहौं निवेरि  
तौ मेरे मन की अवसेरि ॥ टेरि सकल प्रभुता कहौं ॥  
हरि-हरिवंश भेद नहि होय । प्रभु ईश्वर जानै सब कोइ ॥  
दोइ कहै न अनन्यता ॥  
विश्वंभर सब जग आभास । जस वरनौ हरिवंश विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहौं ॥२॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

जन्म-कर्म गुण रूप अपार । बाढ़े कथा कहत विस्तार ॥

बार-बार सुमिरन करौ ॥

हैं लघु मति जु अंत नहीं लहौ । बुद्धि प्रमान कछू कथि कहौं ॥  
रहौं शरण हरिवंश की ॥

सोधौं कहि मोहि केतिक मती । जस बरनत हारैं सरस्वती ॥  
तिती सबै हरिवंश की ॥

देहु कृपा करी बुद्धि प्रकास । जस वरनौ हरिवंश विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहौं ॥३॥

कलियुग कठिन वेद-विधि रही । धर्म कहूँ नहिं दीसत सही ॥  
कही भली कोउ ना करै ॥

उदवस विश्व भयौ सब देश । धर्म रहित मेदिनी-नरेश ॥  
म्लेच्छ सकल पुहुमी बढ़े ॥

सब जन करहिं आधुनिक धर्म । वेद-विहित जानहिं नहिं कर्म ॥  
मर्म भक्ति कौ क्यों लहै ॥

बूडत भव आवै न उसास । जस वरनौ हरिवंश विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहौं ॥४॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

धर्म-रहित जानी सब दुनी । म्लेच्छनि भार दुखित मेदिनी ॥  
धनी और दूजौ नहीं ॥  
करी कृपा मन कियौ विचार । श्रुति-पथ-विमुख दुखित संसार ॥  
सार वेद-विधि उद्धरी ॥  
सब अवतार भक्ति विस्तरी । पुनि रसरीति जगत उद्धरी ॥  
करयौ धर्म अपनौ प्रगट ॥  
प्रगटे जानि धर्म कौ नास । जस वरनौ हरिवंश विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहौं ॥६॥

मथुरा मंडल भूमि आपुनी । जहाँ बाद प्रगटे जग धनी ॥  
भनी अवनि वर आप मुख ॥  
शुभ बासर शुभ रुक्ष विचारि । माधव मास ज्यास उजियारि ॥  
नारिनु मंगल गाइयौ ॥  
तच्छिन देव दुंदुभी बाजिये । जै-जै शब्द सुरनि मिलि किये ॥  
हिये सिराने सबनि के ॥  
तारा जननि जनक रिषि व्यास ॥  
जस वरनौ हरिवंश विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहौं ॥६॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

श्रीभागवत् जु शुक उच्चरी । तैसी विधि जु व्यास विस्तरी ॥  
करी नंद जैसी हुती ॥  
घर-घर तोरन वन्दनवार । घर-घर प्रति चित्रहिं दरबार ॥  
घर-घर पंच शब्द बाजिये ॥  
घर-घर दान प्रतिग्रह होइ । घर-घर प्रति निर्तत सब कोइ ॥  
घर-घर मंगल गावही ॥  
घर-घर प्रति अति होत हुलास । जस वरनौ हरिवंश विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहों ॥७॥

निर्जल सजल सरोवर भये । उखटे वृक्षनि पल्लव नये ॥  
दये सकल सुख सबनि कौ ॥  
असन सयन सुख नित-नित नये । अन्न सुकाल चहूँ दिशि भये ॥  
गये अशुभ सब विश्व के ॥  
मलेच्छ सकल हरि-जस विस्तरहिं । परम ललित वानी उच्चरहिं ॥  
करहिं प्रजा पालन सबै ॥  
अपनी-अपनी रुचि बस वास । जस वरनौ हरिवंश विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहों ॥८॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

अब उपदेश भक्ति कौ कह्यौ । जैसी विधि जाकै चित रह्यौ ॥  
लह्यौ जु मन वाघित सफल ॥  
सब हरि-भक्ति कही समुझाइ । जैसी-जैसी जाहि सुहाइ ॥  
आइ सकल चरननि भजे ॥  
साधन सकल कहे अविरुद्ध । वेद-पुरान सु आगम शुद्ध ॥  
बुद्धि विवेक जे जानही ॥  
समुझ्यौ सबनि सु भक्ति उजास । जस वरनौ हरिवंश विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहौं ॥११॥

अब अवतार भ्रेद तिन कहे । सकल उपासक तिन मन रहे ॥  
कहे भक्ति-साधन सबै ॥  
मथुरा नित्य कृष्ण कौ वास । निशि-दिन श्याम न छाँडत पास ॥  
तासु सकल लीला कही ॥  
कही सबनि की एकै रीति । श्रवन-कथन-सुमिरन परतीति ॥  
बीति काल सब जाइयौ ॥  
उपज्यौ सबनि सुदृढ विश्वास । जस वरनौ हरिवंश-विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहौं ॥१२॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

अब जु कही सब ब्रज की रीति । जैसी सबनि नंद-सुत प्रीति ॥  
कीर्ति सकल जग विस्तरी ॥  
बाल चरित्र प्रेम की नींव । कहत-सुनत सब सुख की रींव ॥  
जीवन ब्रजवासिनु सफल ॥  
ब्रज की रीति सु अगम अपार । विस्तरि कही सकल संसार ॥  
कारज सबहिनु के भये ॥  
ब्रज की प्रीति-रीति अनियास । जस वरनौं हरिवंश विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहौं ॥१३॥

जिहिं विधि सकल भक्ति अनुसार । तैसी विधि सब कियौ विचार ॥  
सारासार विवेकि कैं ॥  
अब निजु धर्म आपुनौं कहत । तहाँ नित्य वृन्दावन रहत ॥  
बहत प्रेम-सागर जहाँ ॥  
साधन सकल भक्ति जा तनौ । निजु-वैभव प्रगटत आपुनौ ॥  
भनौं एक रसना कहा ॥  
श्रीराधा युग चरन निवास । जस वरनौं हरिवंश विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहौं ॥१४॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृन्दावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

द्वित्य प्रकरण  
॥ श्रीहित रस विलास प्रकरण ॥  
[त्रिपदी छन्द]

श्रीहरिवंश नित्य वर केलि । बाढत सरस प्रेम-रस-बेलि ॥

मेलि कंठ भुज खेलहीं ॥

बनितन-गन मन अधिक सिरात । निरखि-निरखि लोचन न अघात ॥

गात गौर-साँवल बने ॥

जूथ-जूथ जुवतिनु के घने । मध्य किशोर-किशोरी बने ॥

गनै कवन रति-अति बढ़ी ॥

नित-नित लीला, नित-नित रास । सुनहु रसिक हरिवंश विलास ॥

श्रीहरिवंशहि गाइहीं ॥६॥

लता भवन सुख शीतल छहाँ । श्रीहरिवंश रहत नित जहाँ ॥

तहाँ न वैभव आन की ॥

जब-जब होत धर्म की हानि । तब-तब तन धरि प्रगटत आनि ॥

जानि और दूजौ नहीं ॥

जो रसरीति सबनि ते दूरी । सो सब विश्व रही भरपूरि ॥

मूरि सजीवन कहि दई ॥

सब जन मुदित करत मन हास । सुनहु रसिक हरिवंश-विलास ॥

श्रीहरिवंशहि गाइहीं ॥७॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज

श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

ललितादिक श्यामा अरु श्याम । श्रीहरिवंश प्रेम रस धाम ॥  
नाम प्रगट जग जानिये ॥  
श्रीहरिवंश-जनित जहाँ प्रेम । तहाँ कहाँ व्रत संयम नेम ॥  
क्षेम सकल, सुख-सम्पदा ॥  
तहाँ जाति-कुल नहीं विचार । कौन सु उत्तम, कौन गँवार ॥  
सार भजन हरिवंश कौ ॥  
या रस मग्न मिटै भव-त्रास । सुनहु रसिक हरिवंश-विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहों ॥३॥

श्रीहरिवंश सुजस गाइयौ । सो रस सब रसिकनि पाइयौ ॥  
कियौ सुकृत सबकौ फल्यौ ॥  
या रस में विधि नहीं निषेध । तहाँ न लगन ग्रहण के वेध ॥  
तहाँ कुदीन-दिन कछु नहीं ॥  
नहिं शुभ-अशुभ, मान-अपमान । नहिं अनृत-भ्रम- कपट-सयान ॥  
स्नान-क्रिया, जप-तप नहीं ॥  
ज्ञान-ध्यान तहाँ सकल प्रयास । सुनहु रसिक हरिवंश विलास ॥  
श्रीहरिवंशहि गाइहों ॥४॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

जहाँ हरिवंश प्रेम-उन्माद । तहाँ कहाँ स्वारथ निस्वाद ॥

वाद-विवाद तहाँ नहीं ॥

जे हरिवंश-नाद मोहिये । तिन फिर बहुरि न कुल-कर्म किये ॥

जिये काल बस ना परे ॥

कुल बिनु कहाँ कौन सौ चाक । सहज प्रेम-रस साँचे पाक ॥

रंक-ईश समुझत नहीं ॥

विप्र न शुद्र कौन कुल कास । सुनहु रसिक हरिवंश विलास ॥

श्रीहरिवंशहिं गाइहों ॥६॥

या रस-विमुख करत आचार । प्रेम बिना जु सबै कृत आर ॥

भार धरत कत विप्र कौ ॥

श्रीहरिवंश किशोर अहीर । अरु तिन संग बनितन की भीर ॥

तीर जमुन नित खेलहीं ॥

तिनकी दई जु जूठन खात । आचारी निज कहत खिस्यात ॥

बात यहै साँची सदा ॥

श्रीहरिवंश कहत नित जास । सुनहु रसिक हरिवंश विलास ॥

श्रीहरिवंशहिं गाइहो ॥७॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज

श्रीहित राधा वल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

तृत्या प्रकरण  
॥ श्रीहित नाम प्रताप प्रकरण ॥  
[त्रिपदी छन्द]

श्रीहरिवंश नाम नित कहौं । नाम प्रताप नाम-फल लहौ ॥

नाम हमारी गति सदा ॥

जे सेवैं हरिवंश सु नाम । पावैं तिन चरननि विश्राम ॥  
नाम रटन संतत करैं ॥

नाम प्रसंग कहत उपदेश । जहाँ यह धर्म धन्य सो देश ॥  
धन्य सु कुल जिहिं जन्म भयौ ॥

धन्य सु तात धन्य सो माझ । संतत सकल सुनहु चित लाझ ॥  
श्रीहरिवंश प्रताप जस ॥६॥

प्रथम हृदय श्रध्दा जो करै । आचारजनि जाझ अनुसरै ॥  
जहाँ-जहाँ हरिवंश के ॥

रसिकनि की सेवा जब होइ । प्रीति सहित बूझाहु सब कोइ ॥  
कौन धर्म हरिवंश कौं ॥

कौन सुरीति कौन आचरन । कौन सुकृत जिहिं पावै शरन ॥  
क्यों हरिवंश कृपा करै ॥

तब-सब धर्म कह्यौ समुझाइ । संतत सकल सुनहु चित लाझ ॥  
श्रीहरिवंश प्रताप जस ॥७॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

प्रथमहि सेवहु गुरु के चरन | जिन यह धर्म कह्यौ सब करन ||  
नाम प्रताप बताइयौ ||

जो हरिवंश नाम अनुसरहु | निशि-दिन गुरु को सेवन करहु ||  
सकल समर्पन प्राण धन ||  
गुरु-सेवा तजि करहिं जे बानि | यहै अर्थर्म यहै सब हानि ||  
कानि न रसिकनि में रहै ||

गुरु-गोविन्द न भेद कराय | संतत सकल सुनहु चित लाइ ||  
श्रीहरिवंश प्रताप जस ||३||

गुरु-उपदेश सुनहु सब धर्म | श्रीहरिवंश नाम फल मर्म ||  
भर्म भग्यो वचननि सुनत ||

शुक-मुख-वचन जु श्रवन सुनावहु | तब श्रीहरिवंश सु नाम कहावहु ||  
मन सुमिरन बिसरै नहीं ||

हरि-गुरु-चरन-सेवा अनुसरहू | अर्चन-वंदन संतत करहु ||  
दासंतन करि सुख लहै ||

सख्य समर्पन भक्ति बढ़ाइ | संतत सकल सुनहु चित लाइ ||  
श्रीहरिवंश प्रताप जस ||४||

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

गुरु-उपदेश चलहु इहिं चाल । ऐसी भक्ति करहि बहु काल ॥

ये नव लक्षण भक्ति के ॥

यह हरि-भक्ति करै जब कोई । तब श्रीहरिवंश-नाम-रति होई ॥

यह जु बहुत हरि की कृपा ॥

हरि-हरिवंश भेद नहिं करै । श्रीहरिवंश नाम उच्चरै ॥

छिन-छिन प्रति बिसरै नहीं ॥

प्रीति सहित यह नाम कहाइ । संतत सकल सुनहु चित लाइ ॥

श्रीहरिवंश प्रताप जस ॥६॥'

गुरु-उपदेश चलहु इहिं रीति । श्रीहरिवंश नाम-पद-प्रीति ॥

प्रेम-मूल यह नाम हैं ॥

प्रेमी रसिक जपत यह नाम । प्रेम मगन निज वन विश्राम ॥

श्रीहरिवंश जहाँ रहैं ॥

प्रेम प्रवाह परैं जन सौइ । तब क्यों लोक-वेद सुधि होइ ॥

जब श्रीहरिवंश कृपा करी ॥

व्रत-संयम तब कौन कराय । संतत सकल सुनहु चित लाइ ॥

श्रीहरिवंश प्रताप जस ॥६॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज

श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

जब यह नाम हृदय आइहै । तब सब सुख-सम्पति पाइहै ॥  
श्रीहरिवंश सुजस कहे ॥  
अरु अपनी प्रभुता नहिं सहें । तृण तें नीच अपुनपौ कहें ॥  
शुभ अरु अशुभ न जानहीं ॥  
समुद्गै नहीं कछू कुल-कर्म । सूधौ चले आपने धर्म ॥  
रसिकनि सौं प्रीतम कहे ॥  
कबहूँ काल वृथा नहिं जाइ । संतत सकल सुनहु चित लाइ ॥  
श्रीहरिवंश प्रताप जस ॥७॥

जब हरिवंश नाम जानि हैं । तब सबही ते लघु मानि हैं ॥  
हँसि बोलै बहु मान दै ॥  
तरु सम सहनशीलता होइ । परम उदार कहें सब कोइ ॥  
सोच न मन कबहूँ करै ॥  
श्रीहरिवंश सुजस मन रहे । कोमल वचन-रचन मुख कहे ॥  
परम सुखद सबकौ सदा ॥  
दुखद वचन कबहूँ न कहाइ । संतत सकल सुनहु चित लाइ ॥  
श्रीहरिवंश प्रताप जस ॥८॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

प्रगट धर्म जैसैं जानियैं । श्रीहरिवंश नाम जा हियैं ॥

नाम सिद्धि पहिचानियैं ॥

श्रीहरिवंश नाम सब सिद्धि । सबै रसिक विलसै नव-निद्धि ॥

भूगतै दैहि न जाँचर्हीं ॥

पोषण भरण न चिंत कराहिं । श्रीहरिवंश विभव;विलसाहिं ॥

श्रीवृन्दावन की माथुरी ॥

गुन गावत जु रसिक सचु पाइ । संतत सकल सुनहु चित लाइ ॥

श्रीहरिवंश प्रताप जस ॥१॥

श्रीहरिवंश धर्म जे धरहिं । श्री हरिवंश-नाम उच्चरहिं ॥

ते सब श्रीहरिवंश के ॥

श्रवण सुनहिं जे श्रीहरिवंश । मुख वरनत वाणी हरिवंश ॥

मन सुमिरन हरिवंश कौं ॥

ऐसे रसिक कृपा जो करै । तौ हम से सेवक निस्तरैं ॥

जूठनि लै पावैं सदा ॥

सेवक शरण रहैं गुण गाइ । संतत सकल सुनहु चित लाइ ॥

श्रीहरिवंश प्रताप जस ॥१०॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज

श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृन्दावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

सरत अन्त छवि वरनि न जाई । छिन-छिन प्रति हरिवंश जु गाई ॥  
आजु सँभारत नाहिन गोरी । अंग-अंग छवि कहौं सु थोरी ॥  
नैन-बैन-भूषन जिहिं भाँती । सो छवि मोपै वरनी न जाती ॥  
प्रेम-प्रीति रसरीति बढाई । श्रीहरिवंश वचन सुखदाई ॥४॥

वंश बजाई विमोहित नारी । बोलीं संग सु नित्यविहारी ॥  
परिरम्भन चुंबन रस केली । विहरत कुँवरि कंठ भुज मेली ॥  
सुन्दर रास रच्यौ वन माँही । जमुना-पुलिन कल्पतरु छाँही ॥  
रास रंग रति वरनि न जाई । नित-नित श्रीहरिवंश जु गाई ॥५॥  
श्रीहरिवंश प्रेम रस गाना । रसिक विमोहित परम सुजाना ॥

अंशनि पर भुज दिये विलोकत । तृष्णित न सुन्दर मुख अवलोकत ॥  
इन्दु-वदन दीसत विवि ओरा । चारु सु लोचन तृष्णित चकोरा ॥  
करत पान रस-मत्त सदाई । श्रीहरिवंश प्रेम-रति गाई ॥६॥

श्रीहरिवंश सु रीति सुनाऊँ । श्यामा-श्याम एक सँग गाऊँ ॥  
छिन इक कबहुँ न अन्तर होई । प्राण सु एक देह हैं दोई ॥  
राधा संग बिना नहीं श्याम । श्याम बिना नहीं राधा-नाम ॥  
छिन-छिन प्रति आराधत रहहीं । राधा नाम श्याम तब कहहीं ॥  
ललितादिकनि संग सचु पावैं । श्रीहरिवंश सुरत-रति गावैं ॥७॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

श्रीहरिवंश गिरा जस गायैं । श्रीहरिवंश रहत सचु पायैं ॥

श्रीहरिवंश नाम परसंगा । श्रीहरिवंश-गान इक संगा ॥

मन-क्रम-वचन कहौं नित टेरैं । श्रीहरिवंश प्राण धन मेरैं ॥

सेवक श्रीहरिवंशहि गावै । श्रीहरिवंश नाम रति पावैं ॥८॥

जयति जगदीश जस जगमत जगतगुरु, जगत वन्दित सु हरिवंश-वानी ।

मधुर कोमल सु पद प्रीति आनन्द रस, प्रेम विस्तरित हरिवंश-वानी ॥

रसिक रस-मत्त श्रुति सुनत पीवन्त रस, रसनि गावन्त हरिवंश-वानी ।

कहत हरिवंश हरिवंश हरिवंश हित, जपत हरिवंश हरिवंश-वानी ॥९॥

कही नित केलि रस खेल वृन्दाविपिन, कुंज तैं कुंज डोलनि वखानी ।

पट न परसंत निकसंत वीथिनु सघन, प्रेम विहूल सु नहि देह मानी ॥

मगन जित जित चलत छिन सु डगमग मिलत, पंथ वन देत अति हेत जानी ।

रसिक हित परम आनन्द अवलोकि तन, सरस विस्तरित हरिवंश वानी ॥१०॥

वंश रस नाद मोहित सकल सुन्दरी, आनि रति मानी कुल छाँडि कानी ।

बाहु परिरम्भ नीवी उरज परसि हँसी, उमगि रतिपति रमित रीति जानी ॥

जूथ जुवतिनु खचित रासमंडल रचित, गान गुन निर्त आनन्द दानी ।  
तत्त-थेई-थेई करत गतिव नौतन धरत, रास रस रचित हरिवंश वानी ॥११॥

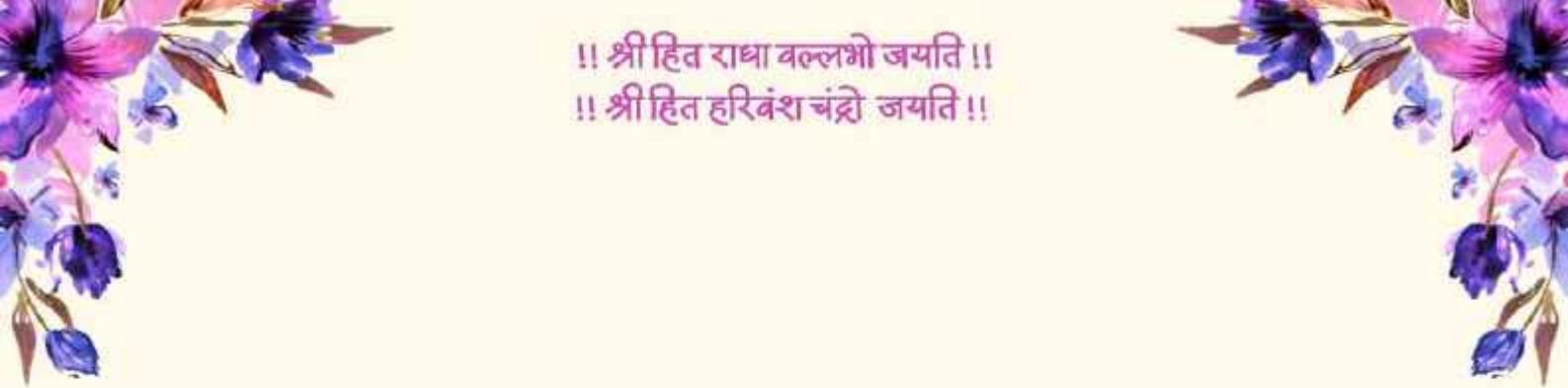
श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज

श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!



रस रस रचित वाणी सु प्रगटित जगत, शुद्ध अविरुद्ध परसिद्धु जानी ।  
श्याम-श्यामा प्रगट, प्रगट अक्षर निकट, प्रगट रस श्रवत अति मधुर वानी ॥  
सो जु वानी रसिक नित्य निशि-दिन रटत, कहत अरु सुनत रसरीति जानी ।  
ताहि तजि और गाऊँ न कबहूँ कछू, प्राण रमी रही हरिवंश वानी ॥१२॥

भाग-अनभाग जानत जु नहिं आपुनौं, कौन धौं लाभ अरु कौन हानी ।  
प्रगट निधि छाँडी कत फिरत रुँका करत, भरम भटकत सु नहिं भूलि जानी ॥  
प्रीति बिनु रीति रुखी जु लागत सकल, जुगति करी होत कत कवित-मानी ।  
रसिक जो सद्य चाहत जु रसरीति फल, तौं कहु अरु सुनहु हरिवंश-वानी ॥१३॥

यहै नित केलि येर्ई जु नाइक निपुन, यहै वन भूमि नित-नित वखानी ।  
बहुत रचना करत राग-रागिनी धरत, तान बंधान सब ठाँनि आनी ॥  
ज्यौं मुंद नहिं मिलत टकसार तैं बाहिरी, लाख में गैर मुहरी जु जानी ।  
यौं जु रसरीति वरनत न ठाँई मिलत, जो न उच्चरत हरिवंश-वानी ॥१४॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

वेद विधा पढ़त कर्म-धर्मनि करत, जल्प तन कल्प की अवधि आनी ।  
चारु गति छाँडि संसार भटकत भ्रमत, आस की पाशि नहिं तोरि जानी ॥  
सकल स्वारथ करत रहत जन्मत-मरत, दुःख अरु सुःख के होत मानी ।  
छाँडि जंजार कैसैं न निश्चय धरत, एक किन रमत हरिवंश-वानी ॥१६॥

वृथा बलगन करत घौस खोवत सकल, सोवतन रात नहिं जात जानी ।  
ऐसी ही भाँति समुझ्यौ न कबहूँ कछू, कौन सुख-दुख को लाभ-हानी ॥  
तब सुःख हरिवंश गुन नाम रसना रटत, और बहु वचन अति दुःख दानी ।  
हानि हरिवंश के नाम अन्तर परे, लाभ हरिवंश उच्चरत वानी ॥१७॥

नाम-वानी निकट श्याम-श्यामा प्रगट, रहत निशि-दिन परम प्रीति जानी ।  
नाम-वानी सुनत श्याम-श्यामा सु बस, रसद माधुर्य अति प्रेम-दानी ॥  
नाम-वानी जहाँ-श्याम-श्यामा तहाँ, सुनत गावंत मो मन जु मानी ।  
बलित शुभ नाम बलि विशद कीरति जगत, हाँ जु बलि जाऊं हरिवंश-वानी ॥१८॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

बलि-बलि श्रीहरिवंश नाम, बलि-बलित विमल जस ।  
बलि-बलि श्रीहरिवंश, कर्म व्रत कृत सु नाम बस ॥  
बलि-बलि श्रीहरिवंश वरन, धर्मनि गति जानत ।  
बलि-बलि श्रीहरिवंश नाम, कली प्रगट प्रमानत ॥  
हरिवंश नाम सु प्रताप बलि, बलित जगत कीरति विशद ।  
हरिवंश विमल वानी सु बलि, मृदु कमनीय सु मधुर पद ॥११॥



श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhla.com](http://www.shriradhavallabhla.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

शरन निरापक पद रमित, सकल अशुभ-शुभ नंश ।  
देत सहज निश्चल भगति, जै-जै श्रीहरिवंश ॥  
श्रीहरिवंश मुदित मन लोभं, श्रीहरिवंश वचन वर शोभं ।  
श्रीहरिवंश काय-कृत कारं, श्रीहरिवंश त्रिशुद्ध विचारं ॥  
पूजा हरिवंश नाम परमारथ, श्रीहरिवंश विवेक परं ।  
धीरज हरिवंश विरद बल बीरज, श्रीहरिवंश अभद्र हरं ॥  
तृस्णा हरिवंश सुजस रस लम्पट, श्रीहरिवंश कर्म करनं ।  
जै-जै हरिवंश जगत मंगल पर, श्रीहरिवंश चरन शरनं ॥३॥

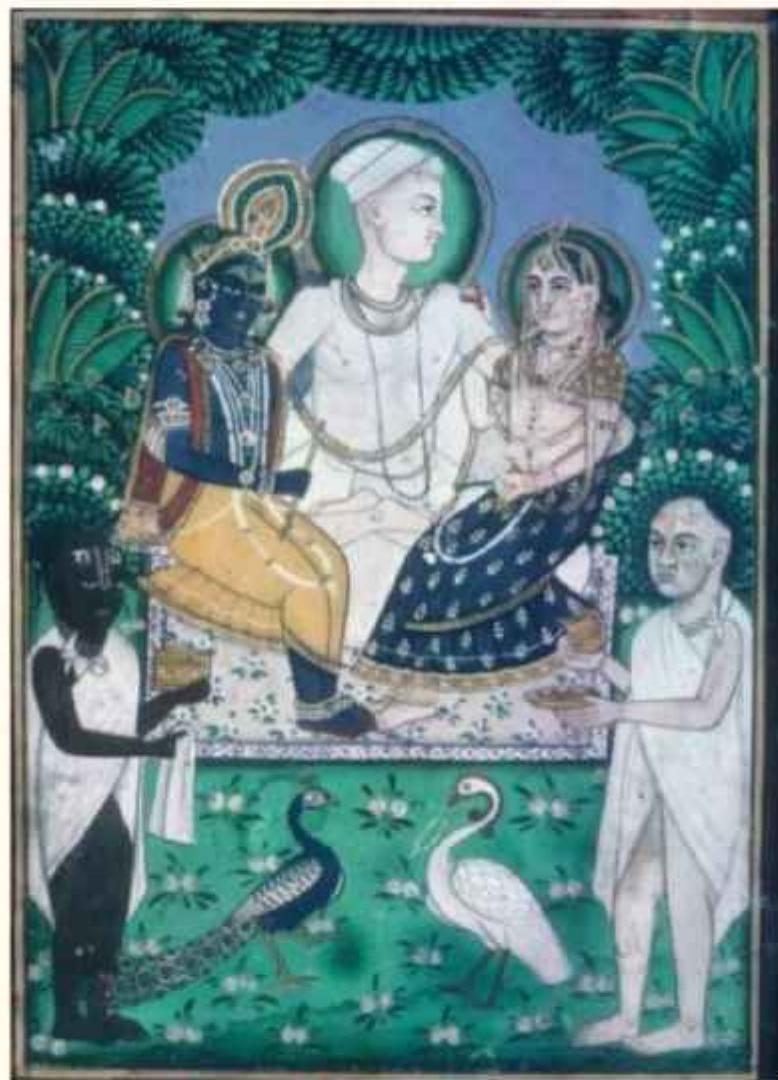
श्रीहरिवंश सुगोत कुल, देव जाति हरिवंश ।  
श्रीहरिवंश स्वरूप हित, रिद्धि-सिद्धि हरिवंश ॥  
श्रीहरिवंश विदित विधि वेदं, श्रीहरिवंश जु तत्व अभेदं ।  
श्रीहरिवंश प्रकाशित योगं, श्रीहरिवंश सुकृत सुख भोगं ॥  
प्रज्ञा हरिवंश प्रतीति प्रमानत, प्रीतम श्रीहरिवंश प्रियं ।  
गाथा हरिवंश गीत गुन गोचर, गुपत, गुनित हरिवंश गियं ॥  
सेवक हरिवंश सार सचित सब, श्रीहरिवंश धर्म धरनं ।  
जै-जै हरिवंश जगत मंगल पर, श्रीहरिवंश चरन शरनं ॥४॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधा वल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

जै-जै श्रीहरिवंश-चन्द्र, विजवर कुल-मण्डन ।  
जै-जै श्रीहरिवंश-चन्द्र, कलि-तम भव खण्डन ॥  
जै-जै श्रीहरिवंश-चन्द्र, अकलंक प्रकाशित ।  
जै-जै श्रीहरिवंश-चन्द्र, सब जग आभासित ॥  
श्रीहरिवंश-चन्द्र अमृत वरषि, सकल-जन्तु तापनि हरनं ।  
सेवक समीप संतत रहे सु, श्रीहरिवंश चरन शरनं ॥६॥



श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

## ष्टम प्रकरण (६)

### ॥ श्रीहित धर्मी-कृत प्रकरण ॥

पहिलैं हरिवंश सु नाम कहौं । हरिवंश सु धर्मिनु संग लहौं ॥  
हरिवंश सु नाम सदा तिनकैं । सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥१॥

हरिवंश सु नाम कहौं नित कैं । मिल ही कहौं कृत सु धर्मिनु कैं ॥  
हरिवंश उपासन हैं तिनकैं । सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥२॥

हरिवंश-गिरा रसरीति कहैं । सुकृतीजन संगति नित्य रहैं ॥  
कछु धर्म विरुद्ध नहीं नितकैं । सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥३॥

हरिवंश प्रसशित नित्य रहैं । रसरीति विवर्धित कृत्य कहैं ॥  
जु कछु कुल कर्म नहीं तिनकैं । सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥४॥

हरिवंश सु नाम जु नित्य रटैं । छिन याम समान न नैंकु घटैं ॥  
विधि और निषेध नहीं तिनकैं । सुख सम्पति दम्पति जू जिनकैं ॥५॥

हरिवंश सु धर्म जु नित्य करैं । हरिवंश कही सु नहीं बिसरैं ॥  
हरिवंश सदा निधि हैं तिनकैं । सुख संपति दंपति जू जिनकैं ॥६॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

हरिवंश प्रतापहिं जानत हैं । हरिवंश प्रबोध प्रमानत हैं ॥  
हरिवंश सु सर्वस है तिनके । सुख सम्पति दम्पति जू जिनके ॥७॥

हरिवंश विचार परे जु रहें । हरिवंश धरम्म धुरा निवहें ॥  
हरिवंश निवाहक हैं तिनके । सुख संपति दम्पति जू जिनके ॥८॥

हरिवंश रसायन पीवतु हैं । हरिवंश कहें सुख जीवतु हैं ॥  
हरिवंश पतिव्रत है तिनके । सुख संपति दम्पति जू जिनके ॥९॥

हरिवंश-गिरा-रसरीति भनै । हरिवंश कहें, हरिवंश सुनै ॥  
हरिवंश हृदय व्रत हैं तिनके । सुख संपति दम्पति जू जिनके ॥१०॥

हरिवंश-कृपा हरिवंश कहें । हरिवंश कहें, हरिवंश लहें ॥  
हरिवंश सु लाभ सदा तिनके । सुख संपति दम्पति जू जिनके ॥११॥

हरिवंश पराइन प्रेम भरे । हरिवंश सु मंत्र जपै सुधरे ॥  
हरिवंश सु ध्यान सदा तिनके । सुख संपति दम्पति जू जिनके ॥१२॥

नित श्रीहरिवंश सु नाम कहें । नित राधिका-श्याम प्रसन्न रहें ॥  
नित साधन और नहीं तिनके । सुख संपति दम्पति जू जिनके ॥१३॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज

श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

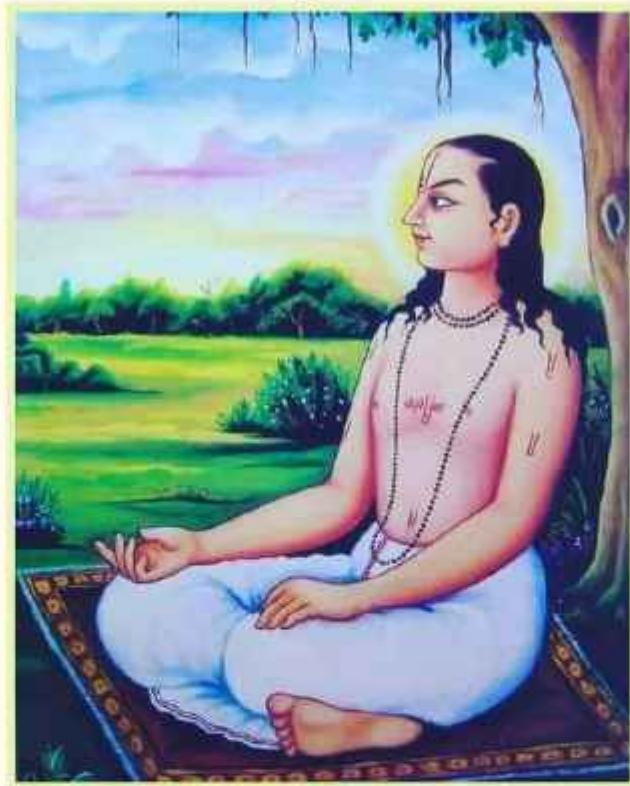
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

जब राधिका-श्याम प्रसन्न भये । तब नित्य समीप सु खैचि लये ॥  
हरिवंश समीप सदा तिनकैं । सुख संपति दम्पति जू जिनकैं ॥१४॥

नित-नित श्रीहरिवंश-नाम, छिन-छिन जु रटत नर ।  
नित-नित रहत प्रसन्न, जहाँ दम्पति किशोर-वर ॥  
जहाँ हरि तहाँ हरिवंश, जहाँ हरिवंश तहाँ हरि ।  
एक शब्द हरिवंश नाम, राख्यौ समीप करि ॥  
हरिवंश नाम सु प्रसन्न हरि, हरि प्रसन्न हरिवंश रति ।  
हरिवंश चरन सेवक जिते, सुनहु रसिक रसरीति गति ॥१५॥



श्रीहित निर्मिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिकंश चंद्रो जयति !!

रसिक रवनी रसद रस-रासि,  
रस-सींवा रस-सागरी, रस निकुज्ज सुख-पुज वरषत ।  
रस-निधि सुविधि रसज्ज रस, रेख रीति रस, प्रीति हरषत ॥

रस मूरति सूरति सरस, रस विलसनि रस रंग ।  
रस प्रवाह सरिता सरस, रति रस लहर तरंग ॥४॥

श्यामसुन्दर उरसि वनमाल,  
उरगभोग भुज दण्ड वर, कम्बु कण्ठ मनिगन विराजत ।  
कुंचित कच मुख ताम रस, मधु लम्पट जनु मधुप राजत ॥

सीस मुकट कुण्डल श्रवन, मुरली अधर त्रिभंग ।  
कनक कपिस पट शोभियत, जनु घन-दामिनि संग ॥५॥

सुभग-सुन्दरी सहज सिंगार,  
सहज शोभा सर्वांग प्रति, सहज रूप वृषभाननन्दिनी ।  
सहजानन्द कदम्बिनी, सहज विपिन उर उदित चन्दिनी ॥

सहज केलि नित-नित नवल, सहज रंग सुख-चैन ।  
सहज माधुरी अंग प्रति, सु मोपै कहत बनै न ॥६॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

विपिन निर्तत रसिक रस-रासि,  
दंपति अति आनन्द बस, प्रेम मत्त निसंक क्रीडत ।  
चंचल कुण्डल कर चरन, नैन लोल रति-रंग ब्रीडत ॥  
झटकति पट चुटकिनु चटक, लटकत लट मृदु हास ।  
पटकत पद उघटत शबद, मटकत भृकुटि विलास ॥७॥

नवल नागरी नवल युवराज,  
नव-नव वन घन क्रीडन्त, नव निकुंज विलसंत सर्वस्य ।  
नव-नव रति नित-नित बढ़त, नयौ नेह नव रंग नयौ रस ॥  
नव विलास कल हास नव, सरस मधुर मृदु बैंन ।  
नव किशोर हरिवंश हित, सु नवल-नवल सुख चैन ॥८॥

नवल-नवल सुख चैन, ऐन आपने आपु बस ।  
निगम-लोक-मर्याद भजि, क्रीडत रंग रस ॥  
सुरत प्रसंग निशंक करत, जोइ-जोइ भावत मन ।  
ललित अंग चलि भगि भाइ, लज्जित सु कोक गन ॥  
अदभुत विहार हरिवंश हित, निरखि दासि सेवक जियत ।  
विस्तरत-सुनत-गावत रसिक, सु नित-नित लीला रस पियत ॥९॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

## अष्टम प्रकरण ॥ श्रीहित अनन्य टेक प्रकरण ॥

कर्म-धर्म कोउ करहु वेद-विधि, कोउ बहु विधि देवतनि उपासी ।  
कोउ तीरथ-तप-ज्ञान-ध्यान-व्रत, अरु कोउ निर्गुण ब्रह्म उपासी ॥  
कोउ यम-नेम करत अपनी रूचि, कोउ अवतार-कदम्ब उपासी ।  
मन-क्रम-वचन त्रिशुद्ध सकल मत, हम श्रीहित हरिवंश उपासी ॥६॥

जाति पाँति कुल कर्म-धर्म-व्रत, संसृति हेतु अविद्या नासी ।  
सेवक रीति प्रतीति प्रीति हित, विधि निषेध श्रृंखला विनासी ॥  
अब जोई कही करैं हम सोई, आयसु लियैं चलैं निजु दासी ।  
मन-क्रम-वचन त्रिशुद्ध सकल मत, हम श्रीहित हरिवंश उपासी ॥७॥

जो हरिवंश कौ नाम सुनावै, तन-मन-प्राण तासु बलिहारी ।  
जो हरिवंश-उपासक सेवै, सदा सेऊँ ताके चरन विचारी ॥  
जो हरिवंश-गिरा-जस गावै, सर्वसु दैहुं तासु पर वारी ।  
जो हरिवंश कौ धर्म सिखावै, सोई तौ मेरे प्रभु तें प्रभु भारी ॥४॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिकंश चंद्रो जयति !!

श्रीहरिवंश सु नाद विमोही, सुनि धुनि नित्य तहाँ मन दैहों ।

श्रीहरिवंश सुनंत चर्लीं सँग, हों तिन संग नित्य प्रति जेहों ॥

श्रीहरिवंश-विलास-रास रस, श्रीहरिवंश संग अनुभैहों ।

जो हरि-नाम जगत्र शिरोमणि, वंश बिना कबहूँ नहिं लैहों ॥४॥

प्रेमी अनन्य भजन्न न होइ जु, अन्तरयामी भजै मन में ।

जो भजि देख्यौ यशोदा कौ नन्दन, तौ विश्व दिखाई सबै तन में ॥

श्रीहरिवंश सुनाद विमोहीं, ते शुद्ध समीप मिलीं छन में ।

अब यामें मिलौनीं मिलै न कछू, जब खेलत रास सदा वन में ॥५॥

जो बहु मान करै कोउ मेरै, कियैं बहु मानत नाहिं बडाई ।

जौ अपमान करै कोउ क्यौं हूँ, कियैं अपमान नहीं लघुताई ॥

श्रीहरिवंश-गिरा रस-सागर, माङ्ग मगन्न सबै निधि पाई ।

जो हरिवंश तजौं भजौं औरहिं, तौ मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥६॥

कही वन-केलि निकुंज-निकुंजनि, नव दल नूतन सेज रचाई ।

नाथ विरंमि- विरंमि कही तब, सो रति तैसी धौं कैसैं भुलाई ॥

सत्वर उठे महा मधु पीवत, माधुरी बानी मेरैं मन भाई ।

जो हरिवंश तजौं भजौं औरहिं, तौ मोहि श्रीहरिवंश-दुहाई ॥७॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज

श्रीहित राधा वल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

भुज अंशनि दीने विलोकि रहे, मुख चन्द उभय मधु पान कराई ।  
आपु विलोकि हृदय कियौ मान, चिबुकक सुचारू प्रलोड मनाई ॥  
श्रीहरिवंश बिना यह हेत को, जानैं कहा को कहै समुझाई ।  
जो हरिवंश तजौं भजौं ओरहिं, तौ मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥८॥

श्रीहरिवंश सु नाद सु रीति, सु गान मिलै बन-माधुरी गाई ।  
श्रीहरिवंश वचन्न रचन्न सु, नित्य किशोर-किशोरी लड़ाई ॥  
श्रीहरिवंश-गिरा-रसरीति सु, चित्त प्रतीति न आन सुहाई ।  
जो हरिवंश तजौं भजौं ओरहि, तौं मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥९॥

श्रीहरिवंश कौं नाम सु सर्वसु, जानि सु राख्यौ मैं चित्त समाई ।  
श्रीहरिवंश के नाम प्रताप कौं, लाभ लह्यौ सु कह्यौ नहिं जाई ॥  
श्रीहरिवंश कृपा तें त्रिशुद्ध कै, साँची यहै जु मेरैं मन भाई ।  
जो हरिवंश तजौं भजौं ओरहि, तौं मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥१०॥

देखे जु मैं अवतार सबै भजि, तहाँ-तहाँ मन तैसौ न जाई ।  
गोकुलनाथ महा ब्रज वैभव, लीला अनेक न चित्त खटाई ॥  
एकहि रीति प्रतीति बँध्यौ मन, मोही सबै श्रीहरिवंश बजाई ।  
जो हरिवंश तजौं भजौं ओरहिं, तौं मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥११॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)

!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

नवम प्रकरण (९)  
॥ श्रीहित कृपा-अकृपा प्रकरण ॥

॥अकृपा सोरठा॥

सब जब देख्यौ चाहि, काहि कहौं हरि-भक्ति बिनु ।  
प्रीति कहूँ नहि आहि, श्रीहरिवंश-कृपा बिना ॥६॥

गुप्त प्रीति कौ भंग, संग प्रचुर अति देखियत ।  
नाहिं उपजत रंग, श्रीहरिवंश-कृपा बिना ॥७॥

मुख बरनत रसरीति, प्रीति चित्त नहिं आवई ।  
चाहत सब जग कीर्ति, श्रीहरिवंश-कृपा बिना ॥८॥

गावत गीत रसाल, भाल तिलक शोभित घना ।  
बिनु प्रीतिहिं बेहाल, श्रीहरिवंश-कृपा बिना ॥९॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

मानत अपनौं भाग, राग करत अनुराग बिनु ।  
दीसत सकल अभाग, श्रीहरिवंश-कृपा बिना ॥६॥

पढत जु वेद-पुरान, दान न शोभित प्रीति बिनु ।  
बींधे अति अभिमान, श्रीहरिवंश-कृपा बिना ॥७॥

दर्शन भक्त अनूप, रूप न शोभित प्रीति बिनु ।  
भरम भटक्कत भूप, श्रीहरिवंश-कृपा बिना ॥८॥

सुन्दर परम प्रवीन, लीन न शोभित प्रीति बिनु ।  
ते सब दीसत दीन, श्रीहरिवंश-कृपा बिना ॥९॥

गुन मानी संसार, और सकल गुन प्रीति बिनु ।  
बहुत धरत सिर भार, श्रीहरिवंश-कृपा बिना ॥१०॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

## ॥कृपा सोरठा॥

मुख वरनत हरिवंश, चित्त नाम हरिवंश-रति ।  
मन सुमिरन हरिवंश, यह जु कृपा हरिवंश की ॥१॥

सब जीवन सौं प्रीति, रेति निवाहत आपुनी ।  
श्रवण-कथन परतीति, यह जु कृपा हरिवंश की ॥२॥

शत्रु-मित्र सम जानि, मानि मान अपमान सम ।  
दुख-सुख लाभ न हानि, यह जु कृपा हरिवंश की ॥३॥

नित इक धर्मिनु संग, रंग बढ़त नित-नित सरस ।  
नित-नित प्रेम अभंग, यह जु कृपा हरिवंश की ॥४॥

निरखत नित्यबिहार, पुलकित तन रोमावली ।  
आनंद नैन सुढार, यह जु कृपा हरिवंश की ॥५॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhla.com](http://www.shriradhavallabhla.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

छिन-छिन रुदन करंत, छिन गावत आनन्द-भरि ।  
छिन-छिन हहर हसंत, यह जु कृपा हरिवंश की ॥६॥

छिन-छिन बिहरत संग, छिन-छिन निरखत प्रेम भरि ।  
छिन जस कहत अभंग, यह जु कृपा हरिवंश की ॥७॥

निरखत नित्य किशोर, नित्य-नित्य नव-नव सुरति ।  
नित निरखत छवि भोर, यह जु कृपा हरिवंश की ॥८॥

तृपित न मानत नैन, कुंज रंध्र अवलोकि तन ।  
यह सुख कहत बनै न, यह जु कृपा हरिवंश की ॥९॥

कहा कहौं बडभाग, नित-नित रति हरिवंश हित ।  
नित वद्धित अनुराग, यह जु कृपा हरिवंश की ॥१०॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

नित वद्धित अनुराग, भाग अपनौं करि मानत ।  
नित्य-नित्य नव केलि, निरखि नैननि सचु मानत ॥  
नित-नित श्रीहरवंश नाम, नव-नव रति मानत ।  
नित-नित श्रीहरिवंश कहत, सोइ-सोइ सिर मानत ॥  
आपुनौ भाग आपुन प्रगट, कहत जु श्रीहरिवंश-बल ।  
हरिवंश भरोसे भये निडर, सु नित गर्जत हरिवंश बल ॥१६॥



श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhla.com](http://www.shriradhavallabhla.com)



!! श्रीहित राधा बल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

श्रीराधाबल्लभ भजत भजि, भली भली सब होय ।  
रसिक अनन्य सजाति भजि, भली भली सब होय ॥  
भली-भली सब होइ, जबहि हरिवंश-चरन-रति ।  
भली भली तब होइ, रचित रसरीति सदा मति ॥  
भली भली तब होइ, भक्ति गुरु-रीति अगाधा ।  
भली भली तब होइ, भजत भजि श्रीहरि राधा ॥३॥

श्रीराधाबल्लभ भजत भजि, भली-भली सब होइ ।  
अशुभ अनर्भल संग जन, विमुख तजौ सब कोइ ॥  
विमुख तजौ सब कोइ, झूठ बोलत सचु मानत ।  
दोष करत निरशंक, रंक करि संतनि जानत ॥  
अभिमानी गर्विष्ठ, लोभ-मद-मत्त अगाधा ।  
दुष्ट परिहरै दूर, भजत भजि श्रीहरि-राधा ॥४॥

श्रीराधाबल्लभ भजत भजि, भली-भली सब होइ ।  
जिते विनायक शुभ-अशुभ, विघ्न करै नहिं कोइ ॥  
विघ्न करै नहिं कोइ, डरै कलि कष्ट काल भय ।  
हरैं सकल संताप, हरषि हरि नाम जपत जय ॥  
श्रीवृद्दावन नित्य केलि, नव-नवल अगाधा ।  
हित हरिवंश किशोर, भजत भजि श्रीहरि-राधा ॥५॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधाबल्लभ लाल मंदिर, वृद्दावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा बल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

श्रीराधाबल्लभ भजत भजि, भली भली सब होय ।  
रसिक अनन्य सजाति भजि, भली भली सब होय ॥  
भली-भली सब होइ, जबहि हरिवंश-चरन-रति ।  
भली भली तब होइ, रचित रसरीति सदा मति ॥  
भली भली तब होइ, भक्ति गुरु-रीति अगाधा ।  
भली भली तब होइ, भजत भजि श्रीहरि राधा ॥३॥

श्रीराधाबल्लभ भजत भजि, भली-भली सब होइ ।  
अशुभ अनर्भल संग जन, विमुख तजौ सब कोइ ॥  
विमुख तजौ सब कोइ, झूठ बोलत सचु मानत ।  
दोष करत निरशंक, रंक करि संतनि जानत ॥  
अभिमानी गर्विष्ठ, लोभ-मद-मत्त अगाधा ।  
दुष्ट परिहरौ दूर, भजत भजि श्रीहरि-राधा ॥४॥

श्रीराधाबल्लभ भजत भजि, भली-भली सब होइ ।  
जिते विनायक शुभ-अशुभ, विघ्न करै नहिं कोइ ॥  
विघ्न करै नहिं कोइ, डरै कलि कष्ट काल भय ।  
हरैं सकल संताप, हरषि हरि नाम जपत जय ॥  
श्रीवृद्धावन नित्य केलि, नव-नवल अगाधा ।  
हित हरिवंश किशोर, भजत भजि श्रीहरि-राधा ॥५॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधाबल्लभ लाल मंदिर, वृद्धावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा बल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

श्रीराधाबल्लभ भजत भजि, भली-भली सब होइ ।  
त्रिविध ताप नासहिं सकल, सब सुख सम्पति होइ ॥  
सब सुख सम्पति होइ, होइ हरिवंश-चरन-रति ।  
होइ विषय-विष नास, होइ वृन्दावन बसि गति ॥  
होइ सुदृढ सत्संग, होइ रसरीति अगाथा ।  
होइ सुजस जग प्रगट, होइ पद प्रीति सु राधा ॥६॥

श्रीराधाबल्लभ भजत भजि, भली-भली सब होइ ।  
भीर मिटै भट यमन की, भय-भंजन हरि सोइ ॥  
भय-भंजन हरि सोइ, भरम भूल्यौ भटकत कति ।  
भगवत-भक्ति विचार, वेद भागवत प्रीति रति ॥  
भक्त-चरण धरि भाव तरत, भव-सिन्धु अगाथा ।  
हित हरिवंश प्रशंस, भजत भजि श्रीहरि-राधा ॥७॥

श्रीराधाबल्लभ भजत भजि, भली-भली सब होइ ।  
अन्य देव-सेवी सकल, चलत पूँजी सी खोइ ॥  
चलत पूँजी सी खोइ, रोइ झाखि द्यौस गँवावहिं ।  
सोइ छपत सब रैंन, जोइ कपि सम जु नचावहिं ॥  
भोइ विषम विष विषय, कोइ सतगुरु नहिं लाधा ।  
थोइ सकल कलि-कलुष, दोइ भजि श्रीहरि-राधा ॥८॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधाबल्लभ लाल मंदिर, वृन्दावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभ जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

श्रीराधावल्लभलाल बिनु, जीवन जनम अकृत्य ।  
बाधा सब कुल-कर्म-कृत, तुच्छ न लागै हत्य ॥  
तुच्छ न लागै हत्य, सत्य समरथ न बियौ तब ।  
माथ धुनत हरि-विमुख, संग यम-पथ चलत जब ॥  
गाथ विमल गुन गान, कृत्य जस श्रवन अगाधा ।  
नाथ अनाथनि हित समर्थ, मोहन-श्रीराधा ॥१॥

कर्मठ कठिन सशल्य नित, सोचत शीश धुनतं ।  
श्रीहरिवंश जु उद्धरी, सोई रसरीति सुनतं ॥  
सोई रसरीति सुनतं, अन्त अनसहन करत सब ।  
जब-जब जियनि विचारि, सार मानत मन-मन तब ॥  
छिन-छिन लोलुप चित्त, समुद्धि घाँडत तातें सठ ।  
करत न संत समाज, जिते अभिमानी कर्मठ ॥१०॥

हित हरिवंश प्रसाशि मन, नित सेवन विश्राम ।  
चित निषेध विधि सुधि नहीं, वितु सचित निधि नाम ॥  
वितु सचित निधि नाम, काम सुमिरन दासन्तन ।  
याम घटी न बिलम्ब, वाम कृत करत निकट जन ॥  
ग्राम पथ आरप्य, दाम दृढ़ प्रेम ग्रथित नित ।  
ता मति रति सुख-रासि, वाम-दश नवकिशोर हित ॥११॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

श्रीराधा-आनन-कमल, हरि-अलि नित सेवतं ।  
नव-नव रति हरिवंश हित, वृन्दाविपिन बसतं ॥  
वृन्दाविपिन बसतं, परस्पर बाहु दंड धरि ।

चलत चरन गति मत्त, करिनि-गजराज गर्व भरि ॥  
कुंज भवन नित केलि करत, नव-नवल अगाथा ।  
नाना काम प्रसंग करत, मिलि हरि-श्रीराधा ॥१२॥

मुख विहँसत हरिवंश हित, रुख रस-रासि प्रवीन ।  
सुख-सागर नागर-गुरु, पुहुप-सैन आसीन ॥  
पुहुप-सैन आसीन, कीन निजु प्रेम केलि बस ।  
पीन उरज वर परसि, भीन नव सुरत रंग-रस ॥  
खीन निरखि मद मदन दीन, पावत जु विलखि दुख ।  
मीनकेतु निर्जित सु लीन, प्रिय निरखि विहँस मुख ॥१३॥

रस-सागर हरिवंश हित, लसत सरित वर तीर ।  
जग जस विशद सु विस्तरित, बसत जु कुंज कुटीर ॥  
बसत जु कुंज कुटीर, भीर नव रंग भामिनि भर ।  
चीर नील गौरांग सरस घन तन पीताम्बर ॥  
धीर बहत दक्षिन समीर, कल केलि करत अस ।  
नीरज सैन सु रचित वीर, वर सुरत रंग रस ॥१४॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृन्दावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

कहत-कहत न कही परै, रहत जु मनहिं विचारि ।  
सहत-सहत बाढ़े भगति, गृह तन गुरु हित गारि ॥  
गृह तन गुरु हित गारि, हारि अपनी करि मानत ।  
चार वेद स्मृति सु चार, क्रम कर्म न जानत ॥  
डारि अविद्या करि विचार चित, हित हरिवंशहिं ।  
नारि रसिक हृष्ट वन विहार, महिमा न परै कहि ॥२६॥

सेवक श्रीहरिवंश के, जग भाजत गुन गाइ ।  
निशि-दिन श्रीहरिवंश हित, हरषि चरन चित लाइ ॥  
हरषि चरन चित लाइ, जपत हरिवंश गिरा-जस ।  
मनसि-वचसि चित लाइ, जपत हरिवंश नाम-जस ॥  
श्रीहरिवंश प्रताप-नाम नौंका निजु खेवक ।  
भव-सागर सुख तरत, निकट हरिवंश जु सेवक ॥२७॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)



!! श्रीहित राधा बल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

## एगिराम प्रकरण

### ॥ श्रीहित ध्यान प्रकरण ॥

स जयति हरिवंश चन्द्र नामोच्चार, वर्द्धित सदा सु बुद्धि ।

रसिक अनन्य प्रधान सतु, साधु मंडली मंडनो जयति ॥

जै जै श्रीहरिवंश हित, प्रथम प्रणऊँ सिर नाइ ।

परम रसद निर्विघ्न है, जैसैं कवित सिराइ ॥

सुकवित्त सुछन्द गनिज्जै, समय प्रबंध वन ।

सुकवि विचित्र भनिज्जै, हरिजस लीन मन ॥

श्रोता सोई परम सुजान, सुनत चित्त रति करै ।

सोइ सेवक रसिक अनन्य, विमल जस विस्तरै ॥

सुजस सुनत वरनत सुख पायौं, कीर-भृंग नारद-शुक गायौं ।

श्रीवृदावन सब सुखदानी, रतन-जटित वर भूमि रवाँनी ॥

वर भूमि रवाँनी सुखद द्रुम-बल्ली, प्रफुलित फलित विविध वरनं ।

नित शरद-बसंत मत्त मधुकर-कुल, बहु पतत्रि नादहि करनं ॥

नाना द्रुम-कुंज मंजु वर वीथी, वन विहार राधा-रवनं ।

तहाँ संतत रहत श्याम-श्यामा-संग, श्रीहरिवंश-चरन-शरनं ॥१॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज

श्रीहित राधाबल्लभ लाल मंदिर, वृद्धावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

रहत सदा सखि संग, रास-रँग रस रसाल उल्लासं ।  
लीला ललित रसालं, सम सुर-तालं वरषत सुख-पुंज ॥  
अतुलित रस वरषत सदा, सुख निधान वन वासि ।  
अदभुत महिमा महि प्रगट, सुन्दरता की रासि ॥  
सुन्दरता की रासि, कनक दुति देह रूचि ।  
वारिज वदन प्रसन्न, हास मृदु रंग शुचि ॥  
सुभु, सुष्ठु ललाट पट, सुन्दर करनं ।  
नैन कृपा अवलोकि, प्रणत-आरति-हरनं ।  
सुन्दर ग्रीव उरसि वनमालं, चारु अंश वर, बाहु विशालं ।  
उदर सु नाभि चारु कटि देशं, चारु जानु शुभ चरन सु वेषं ॥  
शुभ चरन सु वेष मत्त गज वर गति, पर उपकार देह धरनं ।  
निज गुन विस्तार अधार अवनि पर, वानी विशद सु विस्तरनं ॥  
करुनामय परम पुनीत कृपा-निधि, रसिक अनन्य सभाभरनं ।  
जै जग उद्योत व्यास-कुल-दीपक, श्रीहरिवंश चरन शरनं ॥२॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

सारासार विवेकी, प्रेम-पुंज अदभुत अनुराग ।  
हरि-जस-रस-मधु-मत्त, सर्व त्यक्त्वा दुस्त्यज कुल कर्म ॥  
कर्म छाँडि कर्मठ भजे, ज्ञानी ज्ञान विहाइ ।  
व्रतधारी व्रत तजि भजे, श्रवणादिक चित लाइ ॥  
श्रवणादिक चित लाइ, जोग जप तप तजे ।  
औरौ कर्म सकाम, सकल तजि सब भजे ॥  
साधन विविध प्रयास, ते सकल विहावहीं ।  
श्रवन-कथन सुमिरन, सेवन चित लावहीं ॥  
अर्चन-वंदन अरु दासन्तन, सख्य और आत्मा समर्पन ।  
ये नव-लक्षण भक्ति बढ़ाई, तब तिन प्रेम लक्षणा पाई ॥  
पाई रस-भक्ति गूढ जुग-जुग जग, दुर्लभ भव इन्द्रादि विधि ।  
आगम अरु निगम-पुरान अगोचर, सहज माधुरी रूप निधि ॥  
अनभय आनन्दकंद निजु सम्पति, गुपत सुरेति प्रकट करनं ।  
जै जग उघोत व्यास-कुल-दीपक, श्रीहरिवंश-चरन- शरनं ॥३॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

प्रगटित प्रेम प्रकाशं, सकल जंतु शिशरी-कृत चितं ।  
गत कलि-तिमिर समूहं, निर्मल अकलंक उदित जग चद्रं ॥

विशद चन्द्र तारातनय, शीतल किरन प्रकाश ।  
अमृत सींचत मम हृदय, सुखमय आनंद-रासि ॥

सुखमय आनन्द-रासि, सकल जन शोक-हर ।  
समुद्धि जे आये शरन, ते डरत न काल-डर ॥

दियौं दान तिन अभय, ब्दंब्द दुख सब घटे ।  
नित-नित नव-नव प्रेम, कर्म-बन्धन कटे ॥

कटे कर्म-बन्धन संसारी, सुख-सागर पूरित अति भारी ।  
विधिनिषेध-श्रृंखला छुड़ावै, निज आलय वन आनि बसावै ॥

आलय वन बसत संग पारस के, आयस कनक समान भयं ।  
माँगौं मन मनसि दासि अपनी करि, पूरन-काम सदा हृदयं ॥

सेवक गुन-नाम आस करि वरनै, अब निजु दासि कृपा करनं ।  
जै जग उद्योत व्यास-कुल-दीपक, श्रीहरिवंश-चरन-शरनं ॥४॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

बारह प्रकरण  
॥ श्रीहित मंगल गान प्रकरण ॥  
॥राग सूहौ बिलावत॥

जै जै श्रीहरिवंश, व्यास-कुल-मण्डना ।  
रसिकअनन्यनि मुख्य गुरु, जन भय खंडना ॥  
श्रीवृद्दावन वास, रास-रस भूमि जहाँ ।  
क्रीडत श्यामा-श्याम, पुलिन मंजुल तहाँ ॥  
पुलिन मंजुल परम पावन, त्रिविध तहाँ मारुत बहै ।  
कुंज भवन विचित्र शोभा, मदन नित सेवत रहै ॥  
तहाँ संतत व्यासनन्दन, रहत कलुष विहंडना ।  
जै जै श्रीहरिवंश, व्यास-कुल-मण्डना ॥१॥

जै-जै श्रीहरिवंश-चन्द्र उद्घित सदा ।  
विद्ज-कुल-कुमुद प्रकाश, विपुल सुख-सम्पदा ॥  
पर उपकार विचार, सुमति जग विस्तरी ।  
करुना-सिंधु कृपालु, काल-भय सब हरी ॥  
हरी सब कलि काल की भय, कृपा रूप जु वपु धर्यौ ।  
करत जे अनसहन निंदक, तिनहूँ पै अनुग्रह कर्यौ ॥  
निरभिमान निर्वैर निरुपम, निष्कलंक जु सर्वदा ।  
जै जै श्रीहरिवंश-चन्द्र उद्घित सदा ॥२॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृद्धावन  
[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिकंश चंद्रो जयति !!

जै जै श्रीहरिवंश, प्रसशित सब दुनी ।  
सारासार विवेकित, कोविद बहु गुनी ॥  
गुप्त रीति आचरण, प्रगट सब जग दिये ।  
ज्ञान-धर्म-व्रत-कर्म, भक्ति-किंकर किये ॥  
भक्ति हित जे शरण आये, व्दंव्द-दोष जु सब घटे ।  
कमल कर जिन अभय दीने, कर्म-बन्धन सब कटे ॥  
परम सुखद सुशील सुन्दर पाहि स्वामिनी मम धनी ।  
जै जै श्रीहरिवंश, प्रसशित सब दुनी ॥३॥

जै जै श्रीहरिवंश, नाम-गुण गाइ है ।  
प्रेम-लक्षणा भक्ति, सुदृढ करी पाइ है ॥  
अरु बाढ़े रसरीति, प्रीति चित ना टरै ।  
जीति विषम संसार, कीरति जग विस्तरै ॥  
विस्तरै सब जग विमल कीरति, साथु-संगति ना टरै ।  
बास वृन्दाविपिन पावै, प्यारी श्रीराधिका जू कृपा करै ॥  
चतुर जुगल किशोर सेवक, दिन प्रसादहिं पाइहै ।  
जै-जै श्रीहरिवंश, नाम-गुण गाइहै ॥४॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

## तेरह प्रकरण (१३) ॥ श्रीहित पाके धर्मा प्रकरण ॥

साधन विविध सकाम मति सब, स्वारथ सकल सबै जु अनिती ।  
ज्यान-ध्यान-व्रत-कर्म जिते सब, काहू में नहि मोहि प्रतिती ॥  
रसिक अनन्य निशान बजायौ, एक श्याम-श्यामा पद-प्रीति ।  
श्रीहरिवंश चरन निजु सेवक, विचले नही छांडी रसरीति ॥६॥

श्रीहरिवंश धरम्म प्रगटू, निपट्टके ताकी उपमा कौ नाहिन ।  
साधन ताकौ सबै नव लक्षण, तच्छिन वेग विचारत जाहि न ॥  
जो रसरीति सदा अविरुद्ध, प्रसिद्ध विरुद्ध तजत्त क्यौं ताहि न ।  
जो पै धरम्मी कहावत हौ तौ, धरम्मी धरम्म समुद्घात काहि न ॥७॥

जो पै धरम्मिन सौं नहि प्रीति, प्रतीति प्रमानत आन न आनिबौ ।  
एकहि रीति सबन्नि सौं हेत, समीति समेत समान न मानिबौ ॥  
बात सौं बात मिलै न प्रमान, प्रकृति विरुद्ध जुगति कौ ठानिबौ ।  
श्रीहरिवंश के नाम न प्रेम, धरम्मी-धरम्म समुद्घयौ क्यौं जानिबौ ॥८॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

श्रीहरिवंश-वचन्न प्रमाणि कैं, शाकत संग सबै जु बिसारत ।  
संसूति माङ्ग वर्याइकै पायौ जु, मानुष देह वृथा कत डारत ॥  
क्यों न करत धरम्मिन कौ संग, जानि बूझि कत आन विचारत ।  
जौ पै धरम्मी मरम्मी हौ तौ, धरम्मिन सौं कत अंतर पारत ॥४॥

धरम्मी-धरम्म कह्यौ जु करो, तौ धरम्मिन संग बडौ सबतें ।  
स्वर्ग अपुनर्भव जो नाहि बराबर, तौ सुख मर्त्य कह्यौ कब तें ॥  
कह्यौ काहे प्रमान वचन्न बिसारत, प्रेमी अनन्य भये जबतें ।  
श्रीहरिवंश कही जु कृपा करि, सांचौ प्रबोध सुन्यौं अब ते ॥५॥

श्रीहरिवंश जु कही श्याम-श्यामा-पद-कमल-संगी सिर नायौ ।  
ते न वचन मानत गुरु-द्रोही, निशि-दिन करत आपुनौ भायौ ॥  
इत व्यौहार न उत परमारथ, बीचहिं-बीच जु जनम गंवायौ ।  
जो धर्मिनु सौ प्रीति करत नहि, कहा भयौ धर्मी जु कहायौ ॥६॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

करौ श्रीहरिवंश-उपासक संग, जु प्रीति तरंग सुरंग बह्नौ ।  
करौ श्रीहरिवंश की रीति सबै, कुल-लोक-विरुद्ध जु जाइ सह्नौ ॥  
करौ श्रीहरिवंश के नाम सौ प्रीति, जा नाम-प्रताप धरम्म लह्नौ ।  
जु धरम्मी-धरम्म-स्वरूप कह्नौ, बिसरौ जिन श्रीहरिवंश कह्नौ ॥७॥

श्रीहरिवंश-धरम्म जे जानत, प्रीति की ग्रथि तिही मिलि खोलत ।  
श्रीहरिवंश-धरम्मिनु-माङ्ग, धरम्मी सुहात धरम्म लै बोलत ॥  
श्रीहरिवंश धरम्मि कृपा करैं, तासु कृपा रस-मादक डोलत ।  
श्रीहरिवंश की बानी-समुद्र कौ, मीन भयौ जु अगाध कलोलत ॥८॥

व्रत-संयम-कर्म-सुधर्म जिते, सब शुद्ध विरुद्ध पिघानत है ।  
अपनी-अपनी करतूत करैं, रस-मादिक शंक न आनत हैं ॥  
हरिवंश-गिरा-रसरीति प्रसिद्ध, प्रतीति प्रगटु प्रमानत हैं ।  
बलि जाउ अपन्ने धरम्मिनु की, जे धरम्मी धरम्महि जानत हैं ॥९॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

## चौदह प्रकरण [१४] ॥ श्रीहित काचे धर्मा प्रकरण ॥

श्रीहरिवंश-धरम्मिन के संग, आगै हि आगै जु रीति बखानत ।  
आपुनौ जानि कहै जु मिलै मन, उत्तर फेरि चवग्गुन ठानत ॥  
बैठत जाय विधर्मिन में तब, बात धरम्म की एकौं न आनत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौं छन्द, धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥६॥

बातनि जूठनि खान कहै, मुख देत प्रसाद अनूठौड़ छाँडत ।  
ग्रन्थ प्रमानिकैं जो समुझाइयैं, तौ तब क्रोध रार फिर माँडत ॥  
तच्छिन छाँडि प्रेम की बातहि, फेरि जाति-कुल-रीति प्रमानत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौं छंद, धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥७॥

धरम्मिनु माँझ प्रसन्न है बैठत, जाइ विधर्मिनु माँझ उपासत ।  
लालच लगि जहाँ जैसैं तहाँ तैसैं, सोई-सोई तिन मध्य प्रकाशत ॥  
बादहिं होत कुम्हार कौ कूकर, खाली हृदय गुरु रीति न मानत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौं छंद, धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥८॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिकंश चंद्रो जयति !!

नाना तरंग करत्त छिनहि-छिन, रोवत रेंट न लार संभारत ।  
तच्छिन प्रेम जनाइ कहंत जु, मेरी सी रीति काहे अनुसारत ॥  
तच्छिन द्वागरि रिसाइ कहंत जु, मेरी बराबर औरनि मानत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौ छंद, धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥४॥

मेरौ सौ प्रेम मेरौ सौ कीर्तन, मेरी सी रीति काहैं न अनुसारत ।  
मेरौ सो गान मेरौ सो बजाइवो, मेरो सो कृत्य सबै जु बिसारत ॥  
छाडि मर्जाद गुरुन् सौं बोलत, कंचन-काँच बराबर मानत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौं छंद, धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥५॥

देखे जु देखे भलैं जु भलैं तुम, आपुनौं और परायौ न जानत ।  
हौं जु सदा रसरीति वखानत, मेरी बराबर ठागनि मानत ॥  
कैसैं थौं पाऊँ तिहारे हृदय कौं, आन व्दार कैं मोहि न जानत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौ छंद, धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥६॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिकंश चंद्रो जयति !!

और तरंग सुनौ अति मीठी, सखीनु के नाम परस्पर बोलत ।  
तच्छिन केश गहंत मुष्टि हनि, साकत शुद्ध बचावत डोलत ॥  
तच्छिन बोलै तू प्रेत, तू राक्षस, फेरि परस्पर जाति प्रमानत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौ छंद, धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥७॥

जान्यौ धरम्म देखी रसरीति जु, निष्ठुर बोलत वदन प्रकाशित ।  
ऐसैं न वैसैं रहे मझरैंडव, पाछिलियौ जु करी निरभासित ॥  
है हैं फेरि जैसे के तैसे हम, वारे ते आये सन्यासिनु मानत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौ छंद, धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥८॥

एक रिसाने से रुखे से दीखत, पूछत रीति भभुकत धावत ।  
एक रँगमगे बोलत चालत, मामिलेहु वपुरे जु जनावत ॥  
एक वदन्न कै साँची-साँची कहै, चित्त सचाई की एकौ न आनत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौ छंद, धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥९॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिकंश चंद्रो जयति !!

एक धरम्म समुज्ज्ञे बिनाऽव, गुसाई के है जु जगत्र पुजावत ।  
मूल न मंत्र टटोरा की रीति, धरम्मिनु पृष्ठत वदन दुरावत ॥  
एक मुलम्मा सौ देत उघारि जु, वल्लभ सौं वल्लभ परमानत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौं छंद, धरम्मी-धरम्म मरम्म न जानत ॥१०॥

एक गुरुञ्ज सौं वाद करंत जु, पडित मानी है जीभहि ऐठत ।  
एक दरब्ब के जोर बरब्बट, आसन चाँपि सभा मधि बैठत ॥  
एक जु फेरि रीति उपदेशत, एक बड़े है न बात प्रमानत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौं छंद, धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥११॥

एक धरम्मी अनन्य कहाइ, बड़ाई कौं न्यारी ये बाजी सी माँडत ।  
और के बाप सौं बाप कहंत, दरब्ब कै काज धरम्महि छाँडत ॥  
बोलत बोल बटाऊ से लागत, है गुरु मानी न बात प्रमानत ।  
काचे धरम्मिनु के सुनौं छन्द, धरम्मी धरम्म मरम्म न जानत ॥१२॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

परखे सुनहु सुजान, जहाँ कछु और कचाई ।  
भक्त कहै परस्न्न, नतरुता कहैं बुरवाई ॥  
दिये सराहे सुख रहै, दुख में दिन-राती ।  
खैवे कौं जु सजाति, खरच कौं होत विजाती ॥१३॥

लै उपदेश कहाइ अनन्य, अन्हाइ अनर्पित जाइ गटककत ।  
आश करै विषयीन के आगे जु, देखे में जोरत हाथ लटककत ॥  
केतिक आयु कितेक सौ जीवन, काहे विनासत काज हटककत ।  
श्रीहरिवंश-धरम्मिनु छाँड़िकैं, घर-घर काहे फिरत भटककत ॥१४॥

साकत-संग अगिन्न-लपटृ, लपटृ जरत्त क्यौं संगत कीजै ।  
साधु सुबुद्धि समान सु संतनि, जानिके शीतल संगति कीजै ॥  
एक जु काचे प्रकृति विरुद्ध, प्रकृति विरुद्ध करै तौं कहा कीजै ।  
जे आग कैं दाढ़े गये भजि पानी में, पानी में आग लगै तौं कहा कीजै ॥१५॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिकंश चंद्रो जयति !!

प्रगटित श्रीहरिवंश सूर, दुन्दुभि बजाइ बल ।  
मदन-मोह-मद मलित, निदरि निर्दलित दम्भ-दल ॥  
भर्म भग्य भयभीत, गर्व दुर्जन रज खण्डन ।  
लोभ-क्रोध कली-कपट, प्रबल पाखंड विहंडन ॥  
तृष्णा-प्रपञ्च-मत्सर-विसन, सर्व दण्ड निर्बल करैं ।  
शुभ-अशुभ-दुर्ग-विध्वंश बल, तब जयति-जयति जग उच्चरैं ॥१८॥



श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

## पंद्रह प्रकरण ॥ श्रीहित अलभ्य लाभ प्रकरण ॥

हरिवंश नाम है जहाँ-तहाँ उदारता,  
सकामता तहाँ नहीं कृपालुता विशेषिये ।

हरिवंश नाम लीन जे अजातशत्रु ते सदा,  
प्रपञ्च-दंभ आदि दै तहाँ कछू न पेखिये ॥

हरिवंश नाम जे कहै अनन्त सुकर्ख ते लहैं,  
दुराप्य प्रेम की दशा तहाँ प्रत्यक्ष देखिये ।

सोई अनन्य साधु सो जगत्र पूजिये सदा,  
सु धन्य-धन्य विश्व में जनम्म सत्य लेखिये ॥६॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhla.com](http://www.shriradhavallabhla.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

श्रीव्यसनन्द नाम कौ अलभ्य लाभ जानिये ।

हरिवंशचन्द्र जो कही सु चित है सबै लही,  
वचन्न चारु माधुरी सु प्रेम सौं पिछानिये ।

सुने प्रपञ्च जे भये अभद्र सर्व के गये,  
तिन्है मिले प्रसञ्च है न जाति भेद मानिये ॥

सु भाग लागि पाइहै, प्रशसि कण्ठ लाइहै,  
सिराइ नैन देखिकै अभेद बुद्धि आनिये ।

कृपालु है सु भाखिहैं, धरम्म पुष्ट राखिहैं,  
श्रीव्यासनन्द नाम कौ अलभ्य लाभ जानिये ॥२॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

हरिवंश नाम सर्व सार छाँड़ि लेत बहुत भार,  
राज विभौं देखिकैं विषय विषम्म भोवहीं ।

जोरु होत साधु-संग आनी करत प्रीति भंग,  
मान काज राजसीनु के जु मुक्ख जोवहीं ॥

जहाँ तहाँ अन्न खात सखी कहत आपु गात,  
सकल घौंस व्दंव्द जात रात सर्व सोवहीं ।

प्रसिद्ध व्यासनन्द-नाम जान बुझि छोड़हीं,  
प्रमाद तें लिये बिना जनम्म बाद खोवहीं ॥३॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन  
[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

हरिवंश-नाम-हीन खीन दीन देखिये सदा,  
कहा भयौ बहुज है पुरान-वेद पढ़ठहीं ।

कहा भयौ भये प्रवीन जानि मानिये जगत्र,  
लोक रिङ्गि शोभ कौं बनाइ बात गढ़ठहीं ॥

कहा भयौ किये करम्म यज्ञ-दान देत-देत,  
फलनि पाइ उच्च-उच्च देव-लोक चढ़ठहीं ।

परयौ प्रवाह काल कैं कदापि छूटिहै नहीं,  
श्रीव्यासनन्द-नाम जो प्रतीति सौं न रट्हहीं ॥४॥



श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlal.com](http://www.shriradhavallabhlal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

काहे कौं डारत भामिनी, हौं जु कहत इक बात ।  
नैक वदन सन्मुख करी, छिन-छिन कलप सिरात ॥६॥

वे चितवत तव चन्द वदन तन, तू निजु चरन निहारत ।  
वे मृदु चिवुक प्रलोवहीं, तू कर सौं कर टारत ॥७॥

वचन अधीन सदा रहैं, रूप-समुद्र अगाध ।  
प्राण रवन सौं कत करत, बिनु आगस अपराध ॥८॥

चितयौ कृपा करि भामिनी, लीने कंठ लगाइ ।  
सुख-सागर पूरित भये, देखत हियौ सिराइ ॥९॥

सेवक शरन सदा रहै, अनत नहीं विश्राम ।  
के वानी हरिवंश की, के हरिवंशहिं नाम ॥१०॥

॥ श्रीदामोदरदासजी सेवकजी महाराज कृत सेवक वाणी समाप्त ॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhlaal.com](http://www.shriradhavallabhlaal.com)



!! श्रीहित राधा वल्लभो जयति !!  
!! श्रीहित हरिवंश चंद्रो जयति !!

## ॥ श्रीसेवकवानी- फलस्तुति॥

जयति- जयति हरिवंश, नाम-रति सेवकवानी।  
परम प्रीती रसरीति, रहसि कलि प्रगट वखानी ॥  
प्रेम-सम्पति-धाम, सुखद विश्राम धरम्मिन ।  
भनत-गुनत गुन गूढ, भक्त भ्रम भजत करम्मिन ॥  
श्रीव्यासनन्द-अरविन्द-चरण मद, तासु रंग रस राचही ।  
जैश्रीकृष्णदास हित हेत सौं, जे सेवकवानी बाचही ॥

सेवक दरसायौ प्रगट, हित-मग सब सुख सार ।  
चलैं तिही अनुकूल जे, पावैं नित्याबिहार ॥  
सेवै श्रीहरिवंश-पद, सेवक सो ही मानि ।  
और कहै औरहिं भजै, सो विभचारी जानि ॥  
सेवक-गिरा प्रमाण करि, सेवै व्यासकुमार ।  
सेवक सोई जानिये, और सकल व्यभिचार ॥  
सेवक कही सोई करैं, परस्यैं नहिं कछू आन ।  
सेवक सोई जानिये, रसिकअनन्य सुजान ॥

श्रीहित निमिष गोस्वामी जी महाराज  
श्रीहित राधावल्लभ लाल मंदिर, वृंदावन

[www.shriradhavallabhla.com](http://www.shriradhavallabhla.com)

